कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 1

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

भाग - 8

Pritesh Joshi

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

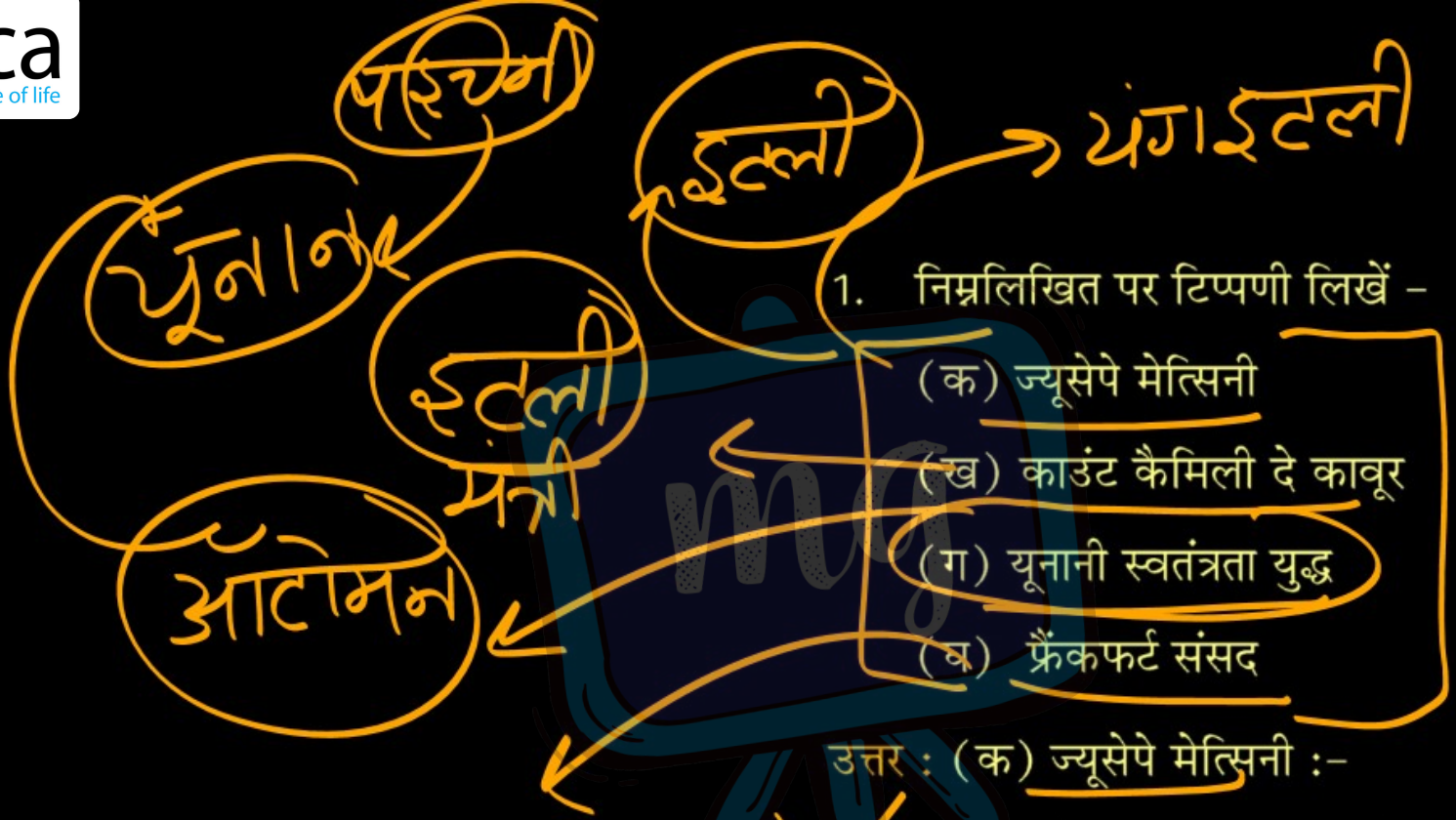

1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें –

(क) ज्यूसेपे मेत्सिनी

(ख) काउंट कैमिली दे कावूर

(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध

(घ) फ्रैंकफर्ट संसद

उत्तर : (क) ज्यूसेपे मेत्सिनी :-

- वह इटली का एक क्रांतिकारी था।
- उनका जन्म 1807 में जेनोआ (इटली) में हुआ था।
- वह कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य बन गया।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 24 वर्ष की अवस्था में लिगुरिया में क्रांति करने के लिए उसे देश से बहिष्कृत कर दिया गया।
- तत्पश्चात् उसने 2 भूमिगत संगठनों की स्थापना की।
  (1) यंग इटली – मार्सेई में
  (2) यंग यूरोप – बर्न में
- इसके सदस्य पोलैंड, फ्रांस, इटली और जर्मन राज्यों में समान विचार रखने वाले युवा थे।
- मेत्सिनी का विश्वास था कि इटली छोटे राज्यों और प्रदेशों के पैबंदों की तरह नहीं रह सकता था।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

राजो एकीकरण। राष्ट्रवादी

- उसे एकीकृत गणराज्य बनाकर राष्ट्रों के गठबंधन से जोड़ना ही था।

(ख) काउंट कैमिली दे कावूर :-

- कावूर इटली के सार्डिनिया - पीडमॉण्ट का प्रमुख मंत्री था।
- इसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया। वह न तो क्रांतिकारी था और न ही जनतंत्र में विश्वास रखने वाला था।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

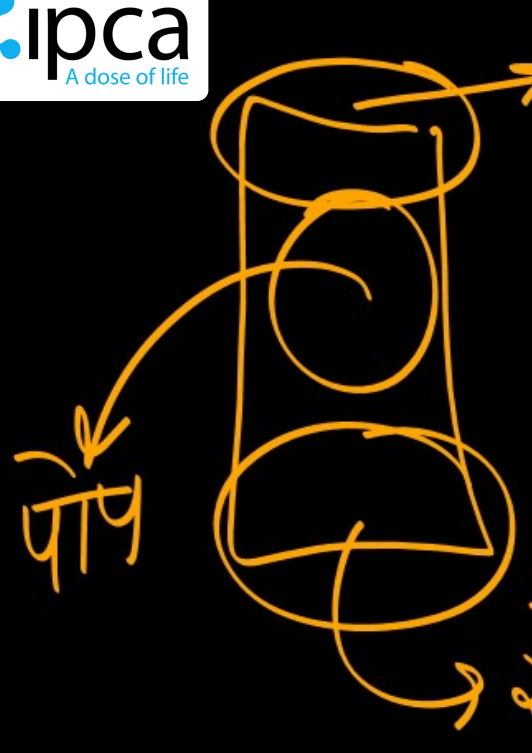



- कावूर इतावली अभिजात वर्ग के तमाम अमीर और शिक्षित सदस्यों की तरह इतावली भाषा से कहीं बेहतर फ्रेंच बोलता था।
- कावूर ने ही इटली की समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बना दिया।
- उसने 1859 में फ्रांस – सार्डिनिया पीडमॉण्ट की एक चतुर व कूटनीतिक संधि की जिससे वह 1859 में फ्रांस की मदद से आस्ट्रियाई – बलों को हरा पाने में कामयाब हुआ।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

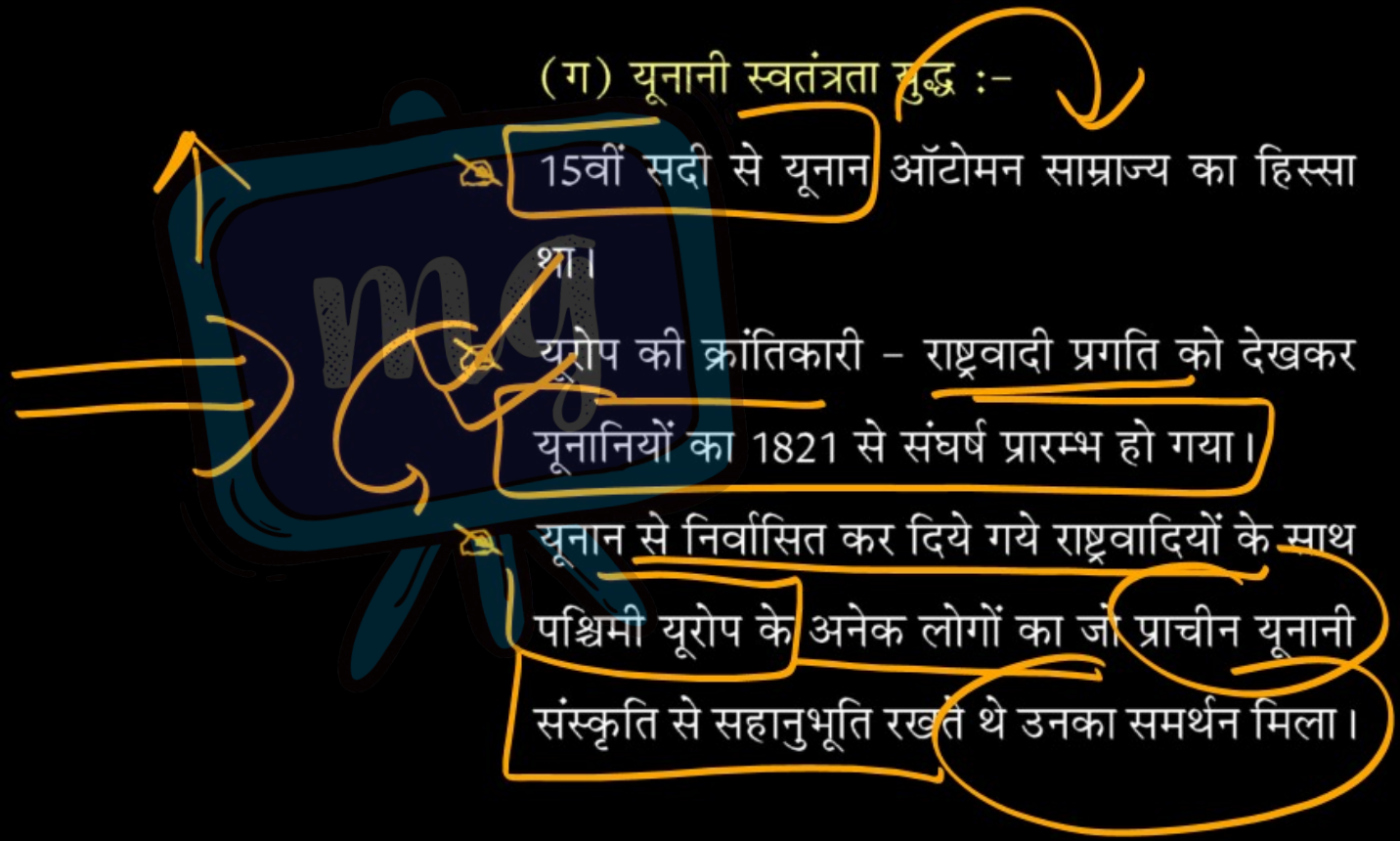

(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध :-

- 15वीं सदी से यूनान ऑटोमन साम्राज्य का हिस्सा था।
- यूरोप की क्रांतिकारी – राष्ट्रवादी प्रगति को देखकर यूनानियों का 1821 से संघर्ष प्रारम्भ हो गया।
- यूनान से निर्वासित कर दिये गये राष्ट्रवादियों के साथ पश्चिमी यूरोप के अनेक लोगों का जो प्राचीन यूनानी संस्कृति से सहानुभूति रखते थे उनका समर्थन मिला।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कवियों और कलाकारों ने यूनान को 'यूरोपीय सभ्यता का पालना' बताकर प्रशंसा की तथा मुस्लिम साम्राज्य के विरूद्ध यूनान के संघर्ष के लिए जनमत जुटाया।
- अंतत: 1832 की कुस्तुनतुनिया संधि से यूनान एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

(घ) **फ्रैंकफर्ट संसद :-**

- जर्मनी के मध्य वर्ग के स्त्री पुरूषों ने राष्ट्र-राज्य एवं संविधान की मांग के साथ-साथ प्रैस की स्वतंत्रता एवं संगठन बनाने की आजादी की मांग की।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इसके लिए जर्मनी के राजनीतिक संगठनों ने 'जर्मन नेशनल ऐसेम्बली' के पक्ष में मतदान को लेकर फ्रेंकफर्ट शहर में मतदान किया।
- 18 मई 1848 को 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने फ्रेंकफर्ट संसद में जोकि सेंट पाल चर्च में आयोजित हुई अपना स्थान ग्रहण किया।
- उन्होंने जर्मन राष्ट्र के लिए एक संविधान का प्रारूप तैयार किया।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

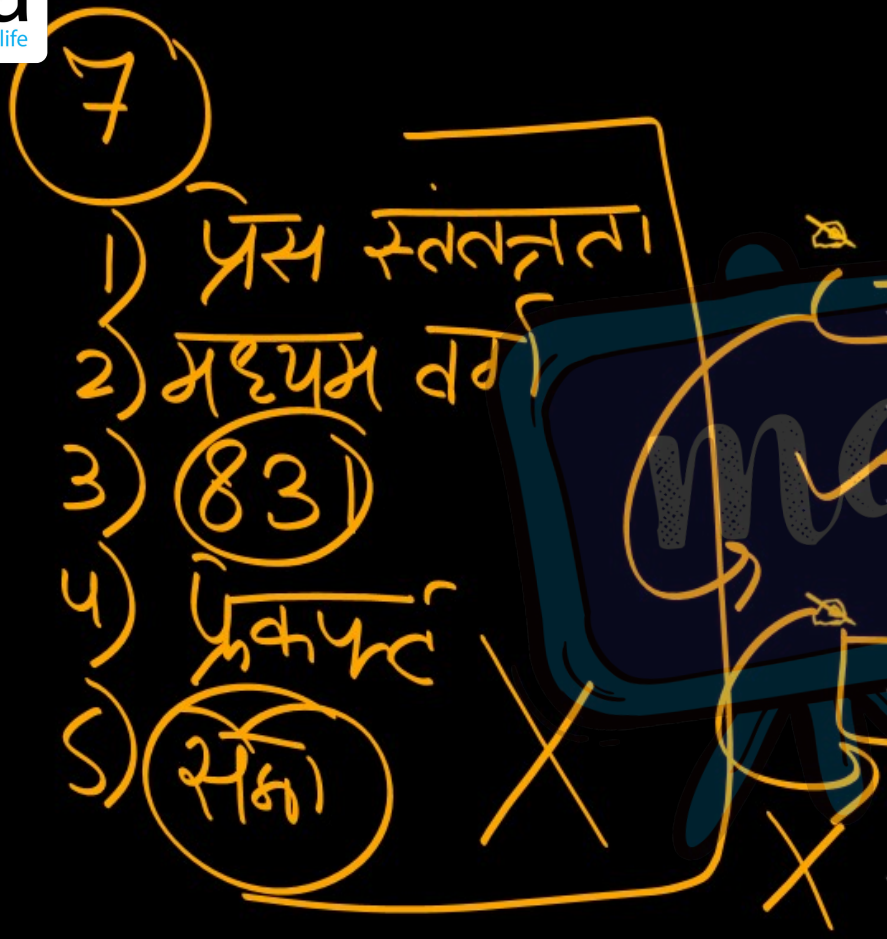

- राष्ट्र की अध्यक्षता प्रशा के राजा फ्रेडरिख विल्हेम चतुर्थ को करने के लिए उसे ताज पहनाने की कोशिश की गई। जिसे उसने अस्वीकार कर उन राजाओं का साथ दिया जो इस निर्वाचित सभा के विरोधी थे।
- इस संसद में कुलीनों ने सेना का तथा मध्य वर्ग ने मजदूरों और कारीगरों की मांग का विरोध किया। अंत में सैनिकों को बुलाकर ऐसेंबली भंग कर दी गयी।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राष्ट्रवादी
↳ महिलाओं
↳ उदारवादी
↓
१) संगठन

(ड.) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका :-

- राष्ट्रवादी आंदोलनों में महिलाओं ने वर्षों से सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किये, अखबार शुरू किये और राजनीतिक बैठकों व प्रदर्शनों में शिरकत की।
- फिर भी उन्हें रजानीतिक - अधिकार देने का मुद्दा विवादास्पद था।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- उन्हें ऐंसेबली चुनाव के समय मताधिकार से वंचित रखा गया।
- सेंटपाल चर्च में फ्रेंकफर्ट संसद की सभा में उन्हें केवल प्रेक्षकों की हैसियत से दर्शक दीर्घा में खड़े होने दिया गया।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

निरंकुशतावाद

राजशाही → अंकुश।

राजा → शोषण, दमन

→ केन्द्रीकृत

→ सैन्य बल

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने क्या कदम उठाये ?

उत्तर : फ्रांसीस क्रांतिकारियों ने सामूहिक पहचान की भावना पैदा करने के लिए अनेक कदम उठाये –

- पितृभूमि और नागरिक जैसे विचारों ने राष्ट्र एकता की भावना पर बल दिया।
- उन्हें एक संविधान के अर्न्तगत समान अधिकार दिये गये।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- एक नया फ्रांसीसी तिरंगा चुना गया जिसने पहले के राष्ट्रध्वज की जगह ले ली।
- इस्टेट जनरल का नाम बदलकर 'नेशनल ऐसेम्बली' कर दिया गया।
- एक केन्द्रीय प्रशासनिक व्यवस्था लागू की गई जिसने सभी नागरिकों के लिए समान कानून बनाये।
- आंतरिक आयात-निर्यात शुल्क समाप्त कर दिये गये।
- भार तथा नापने की एक समान व्यवस्थ लागू की गयी।
- क्षेत्रीय बोलियों को हतोत्साहित कर पेरिस में फ्रेंच को ही बोला और लिखा जाने लगा, यही राष्ट्र की साझा भाषा बन गयी।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

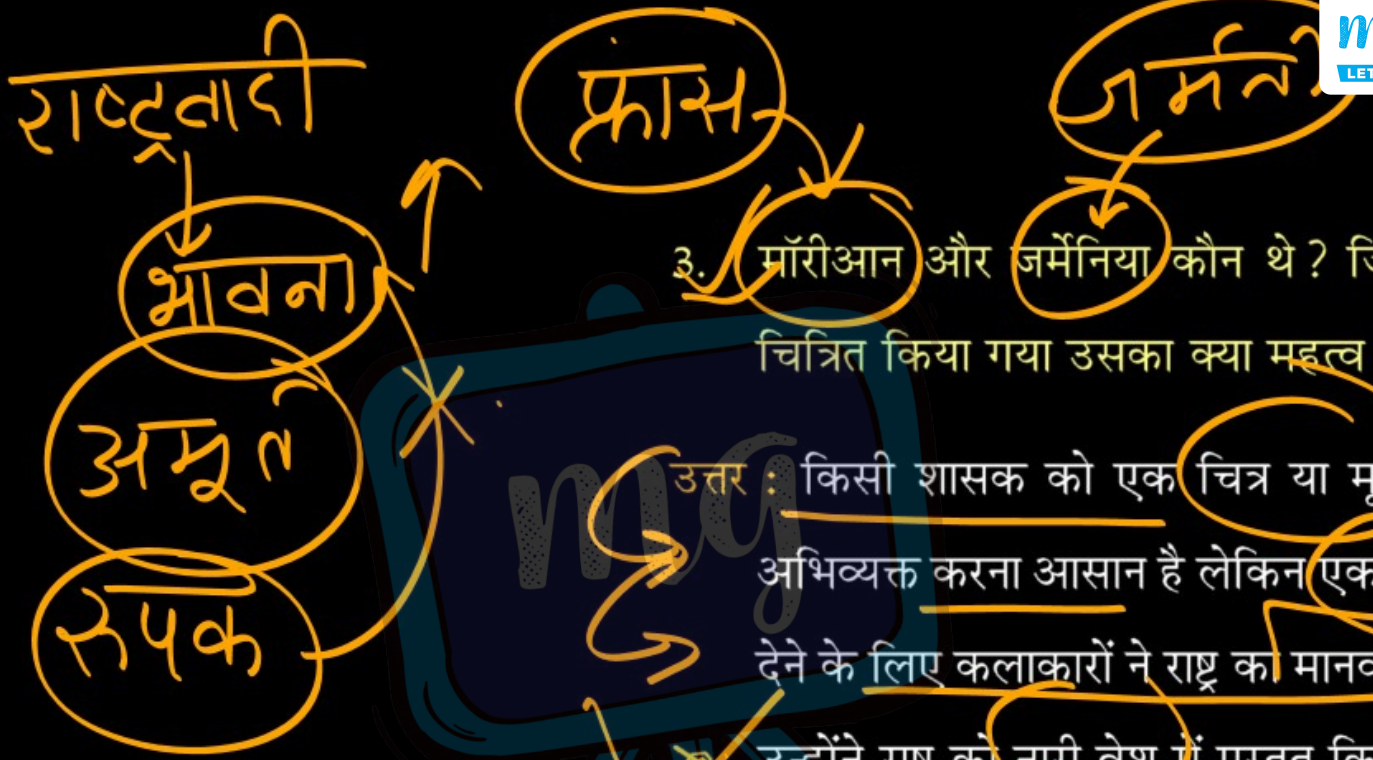

3. मॉरीआन और जर्मेनिया कौन थे? जिस तरह उन्हें चित्रित किया गया उसका क्या महत्व था?

उत्तर : किसी शासक को एक चित्र या मूर्ति के रूप में अभिव्यक्त करना आसान है लेकिन एक राष्ट्र का चेहरा देने के लिए कलाकारों ने राष्ट्र का मानवीकरण किया।

- उन्होंने राष्ट्र को नारी वेश में प्रस्तुत किया।
- यह नारी असल जिंदगी में कोई खास महिला नहीं थी।
- नारी की छवि राष्ट्र का रूपक बन गयी।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(i) फ्रांस :-

- फ्रांस में उसे लोकप्रिय नाम 'मारिऑन' दिया गया।
- इसने जन-राष्ट्र के विचार को अभिव्यक्त किया।
- उसके चिन्ह लालटोपी, तिरंगा व कलंगी भी स्वतंत्रता व गणतंत्र के थे।
- मॉरिआन की प्रतिमाऐं सार्वजनिक चौकों पर लगाई गयी। ताकि जनता को राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे और लोग उससे तादाम्य स्थापित कर सकें।
- मॉरिआन की छवि सिक्कों व डाक टिकटों पर अंकित की गयी।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) जर्मनी में जर्मेनिया :-

- जर्मनी में जर्मेनिया राष्ट्र का रूपक बन गयी।
- जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मनी बलूत वीरता का प्रतीक है।
- इसके चित्र को 1848 में सूती झण्डे पर बनाकर सेंटपाल चर्च की छत पर भी लटकाया गया जहां 1848 में फ्रेंकफर्ट संसद बुलाई गई।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

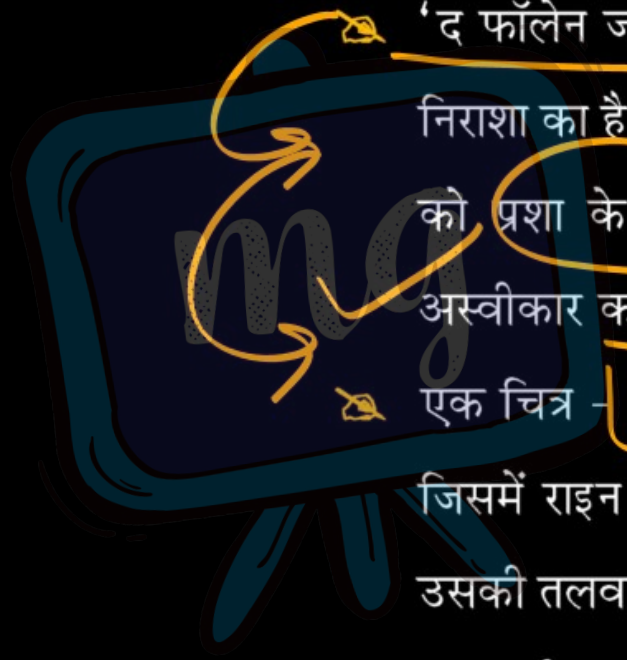

- 'द फॉलेन जर्मेनिया' का एक चित्र भी है जो उस निराशा का है जब जर्मनी के एकीकृत राज्य के ताज को प्रशा के राजा फ्रेडरिख विलियम चतुर्थ ने अस्वीकार कर दिया था।
- एक चित्र – 'जर्मेनिया गार्डिंग द राईन' का भी है जिसमें राइन नदी पर पहरा देती जर्मेनिया है और उसकी तलवार पर खुदा है – ''जर्मन तलवार जर्मन राइन की रक्षा करती है।''

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

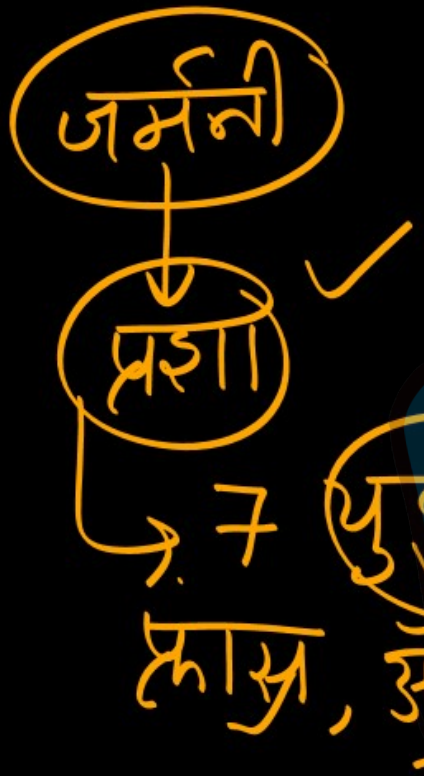

4. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में पता लगाएँ।

उत्तर :

- जर्मन एकीकरण का प्रथम प्रयास 1848 में हुआ जब जर्मन-महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर फ्रेंकफर्ट में एक निर्वाचित संसद द्वारा राष्ट्र राज्य बनाने का प्रयास किया गया।
- लेकिन राजशाही तथा फौज की ताकत ने उसे दबा दिया।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके बाद प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व संभाल लिया।
- प्रशा का प्रमुख मंत्री ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था।
- बिस्मार्क ने इसके लिए सेना और नौकरशाही की मदद ली।
- 7 वर्षों के दौरान उसने
  (i) डेनमार्क (1864)
  (ii) ऑस्ट्रिया (1866)
  (iii) फ्रांस (1871) से तीन युद्ध किये जिनमें प्रशा की जीत हुई।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ऑस्ट्रिया सदैव से ही जर्मन एकीकरण का विरोधी था।
- जर्मनी के लिए फ्रांस भी सदैव खतरा बना रहता था।
- बिस्मार्क ने सबसे पहले ऑस्ट्रिया से मित्रता करके अपनी कूटनीतिक चाल से ऑस्ट्रिया के साथ मिलकर 1864 में डेनमार्क को हराया।
- युद्ध में प्राप्त उपनिवेशों की आड़ में 1866 में ऑस्ट्रिया से युद्ध करके उसे पराजित किया।
- अंत में 1871 में सेडोवा में फ्रांस को पराजित किया।
- इस प्रकार से एकीकरण की समस्त बाधाऐं खत्म होने पर एकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

* नेपोलियन संहिता

5. अपने शासन वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने क्या बदलाव किये ?

उत्तर : प्रशासनिक क्षेत्र में नेपोलियन ने क्रांतिकारी सिद्धांतों का समावेश किया।

- 1804 में नेपोलियन ने एक नागरिक संहिता प्रस्तुत की जिसे नेपोलियन संहिता के नाम से जाना जाता है।
- उसने सर्वप्रथम जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिये थे।
- कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उसने अपने नियंत्रण के सभी क्षेत्रों में प्रशासनिक व्यवस्था का विभाजन कर उसे सरल बनाया।
- सामंती व्यवस्था को खत्म कर किसानों को भू-दासत्व और जागीरदारी शुल्कों से मुक्ति दिलाई।
- शहरों में भी कारीगरों के श्रेणी संघों के नियंत्रण को हटा दिया।
- यातायात और संचार व्यवस्थाओं को सुधारा गया।
- किसानों, कारीगरों, मजदूरों और नये उद्योपगतियों ने इस नई आजादी को चखा।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

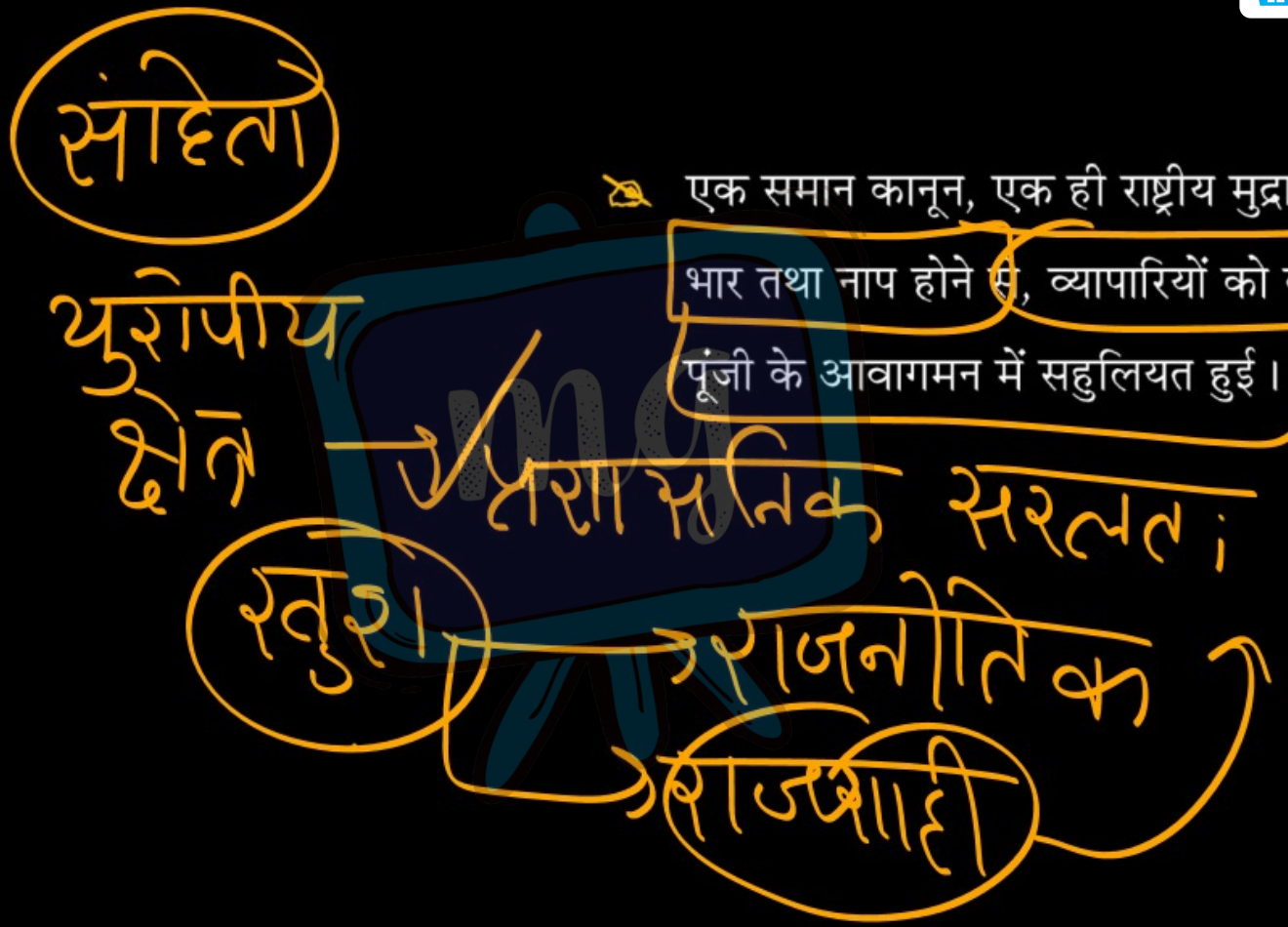

- एक समान कानून, एक ही राष्ट्रीय मुद्रा तथा मानक भार तथा नाप होने से, व्यापारियों को वस्तुओं और पूंजी के आवागमन में सहुलियत हुई।